

आधुनिक समाज में पुस्तकालय का महत्व

मूर्तिमती सामन्तराय*

पुस्तकालय बच्चों में पढ़ने की आदत विकसित करने में बहुत बड़ी भूमिका निभाते हैं। पुस्तकालयों की मनुष्य की सामाजिकता में भी बहुत बड़ी भूमिका है। पुस्तकालय किसी भी जागरूक समाज की विशिष्ट पहचान है। प्रस्तुत लेख में भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण से पुस्तकालय की भूमिका को दर्शाया गया है जैसे कि मनुष्य की सामूहिकता, ज्ञान का संग्रह, पठन की आदत का विकास, शोध कार्यों के लिए प्रेरणा और स्वास्थ्य मनोरंजन का खजाना आदि। इन सब उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किसी भी पुस्तकालय को किस प्रकार से कार्य करना चाहिए और उसमें किस प्रकार के नवीनतम साधन होने चाहिए, इस बात की चर्चा इस लेख में की गयी है। शिक्षा हमारी प्रगति का आधार है, अतः हर विद्यालय में पुस्तकालय स्थापित करने का समय आ गया है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और मनुष्य का विकास समाज में रहकर ही होता है। प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व समाज में रहकर ही विकसित होता है। समाज से बच्चों को सुरक्षा और प्यार मिलता है। केवल व्यक्ति ही समाज पर निर्भर नहीं रहता, बल्कि समाज भी व्यक्तियों के माध्यम से संरचित तथा संगठित होता है। समाज में निरक्षरता अज्ञानता का भय उत्पन्न करती है, जो सामाजिक परिवर्तन में बाधा डालती है। शिक्षित लोग सभी प्रकार की इच्छाओं को जन्म देते हैं तथा उनकी प्राप्ति के साधन भी विकसित करते हैं। शिक्षा आवश्यक ज्ञान और दक्षता प्रदान करती है, जो व्यक्ति को समाज में आदर्श रूप में कार्य करने योग्य बनाती है। भारत में शिक्षा के सभी स्तरों पर बहुत विकास हुआ है। अब सभी स्तरों पर गुणात्मक शिक्षा पर बल दिया जा रहा है। शिक्षा के

माध्यम से मनुष्य स्वयं को और जगत को जानने का प्रयास करता है। इसके साथ ही अतीत और भविष्य के बीच पुल का निर्माण करता है ताकि सांस्कृतिक विरासत को आगे ले जा सके। शिक्षा के द्वारा वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होता है, जो आधुनिकीकरण का साधन है। शिक्षा से ही नवीनतम जानकारी प्राप्त होती है। शिक्षा आपके दृष्टिकोण का विकास करने में सहायता करती है, जिससे आधुनिकीकरण अपनाने में आसानी होती है।

वर्तमान में शिक्षा व्यवस्था में गुणवत्ता हेतु विशेष प्रयास की ज़रूरत है। हमें (1) इस प्रकार ज्ञान उत्पन्न करना चाहिए, जो हमारे बदले हुए समाज के लिए सार्थक हो, (2) ज्ञान की विशेष शाखा से संबंधित प्रौद्योगिकी, रोजगार संभावनाएँ या निवेश की दृष्टि से विकास के लिए उपयुक्त हो, (3) आर्थिक विकास

*उप-पुस्तकालयाध्यक्ष, पुस्तकालय प्रलेखन प्रभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली

करने में भी शिक्षा का योगदान हो। आप सबको यह ज्ञात है कि, भारत में *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* की घोषणा की गई है, जिसमें भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए ज्ञान और दक्षता की राह सुझाई गई है और जो आगे चलकर देश की समस्याओं के समाधान में सहायक होगी। नयी शिक्षा नीति में आत्मनिर्भर भारत बनने पर बल दिया गया है। शिक्षित और जागरूक नागरिक ही समाज एवं देश के प्रति अपने दायित्वों को निर्वहन कर सकेगा और राष्ट्र की प्रगति में योगदान दे पाएँगे। इस दिशा में विद्यालयी शिक्षा एवं पुस्तकालयों की अहम भूमिका है।

आधुनिक समाज में मानव के सर्वांगीण विकास के लिए ज्ञान एवं सूचना प्रदान करना बहुत आवश्यक है। साक्षर भारत बनाने में पुस्तकालयों की अहम भूमिका होती है। पुस्तकालय का कार्य है— ज्ञान एवं सूचना को इकट्ठा करना, उनको वैज्ञानिक प्रक्रिया का रूप देना, सुरक्षित रखना एवं अंत में ज्ञान के भंडार को पाठकों के उपयोग के लिए उनके समक्ष प्रस्तुत करना। अतः पुस्तकालय का महत्व अमूल्य है। विशेषकर शिक्षा, विकास एवं शोध के क्षेत्र में पुस्तकालय का महत्व है।

समाज और पुस्तकालय

मानव के मस्तिष्क में आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, सौंदर्य एवं आदर्शों को पाने की नैसर्गिक प्रवृत्ति होती है, जिसके द्वारा वह अपने जीवन को ऊँचे शिखर की ओर ले जाना चाहता है। मनुष्य को मनोरंजन की भी आवश्यकता होती है। इन सब जरूरतों को पूरा करने में पुस्तकालय मददगार होता है। समाज में सार्वजनिक पुस्तकालय होते हैं। कुछ सार्वजनिक पुस्तकालयों को राष्ट्रीय पुस्तकालय भी घोषित किया गया है।

सार्वजनिक पुस्तकालय मोबाइल पुस्तकालय के रूप में भी हमारे सम्मुख हैं। सार्वजनिक पुस्तकालय समाज के सार्वजनिक एवं बौद्धिक विकास के लिए हर समय प्रयत्नशील रहता है। सार्वजनिक पुस्तकालय को “लोगों का विश्वविद्यालय” भी कहा जाता है। आधुनिक समाज में पुस्तकालयों का आधुनिकीकरण भी किया गया है।

पुस्तकालयों की आधुनिक अवधारणा ही समाजिक अवधारणा है। आज के पुस्तकालय सेवा-संस्थाएँ हैं। आधुनिक पुस्तकालयों में मुद्रित, दृश्य-श्रव्य सामग्री, सामयिक पत्रिकाएँ, हस्तलिखित ग्रंथ, नक्शे, चार्ट्स, ध्वनि-अभिलेखन सामग्री, चल-चित्र, स्लाइड्स, फ़िल्म स्ट्रिप्स, चुंबकीय टेप, फ़ोनोग्राफ़, अभिलेख, संगीत, माइक्रोफ़ोन, ई-बुक्स, ई-पत्रिकाओं, डेटाबेस और अभिलेखीय सामग्री आदि सम्मिलित हैं। ये सभी सेवाएँ प्रदान करना पुस्तकालयों की आधुनिक अवधारणा है। आधुनिक पुस्तकालय ज्ञान एवं सूचनाप्रद सामग्री को संग्रह करते हैं। इसके साथ ही इसे वैज्ञानिक रूप से सुव्यवस्थित करते हुए अपने पाठकों को उपलब्ध कराते हैं और उन्हें एक नियमित पाठक बनाते हैं। एक-एक पाठक पाठक-समाज की सृष्टि करते हैं और सामाजिक विकास हेतु सहयोग करते हैं, इसलिए कहा जाता है कि ‘पढ़ने वाला राष्ट्र एक अग्रणी राष्ट्र है’।

पुस्तकालय समाज में होने वाले परिवर्तन के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहे हैं। अतः ओपन एक्सेस सिस्टम, जनसंपर्क, विस्तार कार्यक्रम, कंप्यूटरीकरण, नेटवर्किंग, दूरदर्शन का उपयोग, डिस्कवरी सेवा, साहित्यिक चोरी की जाँच इत्यादि को अपनी सेवा के लिए अपनाते हैं। समाज के समाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा

बौद्धिक जीवन का विकास में पुस्तकालय की भूमिका अपार है। लोगों को स्व-शिक्षा में मददगार होना पुस्तकालय का धर्म है। खाली समय का उपयोग करने में पुस्तकालय बहुत सहायक होते हैं। अध्ययन एवं शोध के लिए पुस्तकालय प्रयोगशाला के रूप में कार्य करते हैं।

पुस्तकालयों में प्रलेखों का संरक्षण, सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण होता है, अतः पुस्तकालय औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा का केंद्र बिंदु बने रहते हैं। पुस्तकालय अपने पाठकों को साक्षर, शिक्षित, जागरूक नागरिक बनाता है। जागरूक नागरिक समाजिक परिवर्तन में सहायक होते हैं। बिना पुस्तकालय शोधकार्य की कल्पना करना ही व्यर्थ है। पाठ्य सामग्री खोजने, संदर्भ ग्रंथों का उपयोग करने में सहायता देना, पुस्तकों का आदान-प्रदान, रेप्रोग्राफिक सुविधा प्रदान करना, इंडेक्सिंग और एब्सट्रेक्टिंग सेवा प्रदान करना, पाठक परामर्शदात्री सेवा प्रस्तुत करना, वर्तमान जागरूकता सेवाएँ, सूचना का चयनात्मक प्रसार, इंटरनेट ब्राउज़िंग, डेटाबेस के बारे में ज्ञान प्रदान करना, अलग विषय डोमेन के बारे में बताते हुए समाज के सर्वांगीण प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पुस्तकालय द्वारा प्रस्तुत सूचना साक्षरता कार्यक्रम भी समाज की नयी विषयवस्तु तथा सरकारी कार्यक्रमों के बारे में अवगत करता है। अतः पुस्तकालय समाज के बहुमुखी विकास में एक महत्वपूर्ण योगदान देता है।

पुस्तकालय का उद्देश्य सामाजिक होता है। आजकल डिजिटल युग में वैश्विक महामारी के समय में हमें यह पता चल गया कि केवल प्रत्यक्ष रूप से ही नहीं डिजिटल रूप से भी हम पुस्तकालय में उपलब्ध संसाधनों का प्रयोग कर पाएँगे। जैसा कि हम जानते हैं कि रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा प्रस्तुत ई-पाठशाला,

एन.आर.ओ.ई.आर., स्वयं, स्वयंप्रभा, स्वयं मूक्स इत्यादि मंच का भी हम सब प्रयोग कर पाएँगे। नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ़ इंडिया (एन.डी.एल.आई.) यह एक ऐसा द्वार है जहाँ से हम स्वयं अधिगम कर सकते हैं तथा ज्ञान को उपलब्ध कर सकेंगे। पुस्तकालय हमारे लिए प्रत्यक्ष रूप से और डिजिटल रूप से उपलब्ध हैं। शारीरिक और दिव्यांग पाठकों के लिए सुगम्य पुस्तकालय का भी विकास किया गया है। अतः समाज के सभी वर्गों के लिए पुस्तकालय की सुविधा है।

विद्यालयी पुस्तकालय और सीखना

पुस्तकालय विद्यालय का दिल है और वास्तव में पढ़ना-लिखना सीखने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। स्कूल के पुस्तकालयाध्यक्ष पुस्तकालय के संसाधनों को संभालते हैं और पाठकों तक पहुँचने से पहले उनका वैज्ञानिक रूप से प्रबंधन करते हैं। एक नेता के रूप में स्कूल लाइब्रेरियन स्वतंत्र शिक्षण कार्यक्रम चलाते हैं जो सूचना संसाधनों और प्रौद्योगिकियों को एकीकृत करता है। पुस्तकालय सॉफ्टवेयर के माध्यम से विद्यालयी पुस्तकालय संसाधनों और सेवाओं को संचालित किया जाता है। विद्यालयी पुस्तकालय विद्यार्थियों को संसाधनों तक पहुँचने के लिए आवश्यक कौशल से लैस करता है, जैसे— आवश्यक संसाधनों को खोजने में सफल करता है, लगातार बदलते तकनीकी, सामाजिक और आर्थिक वातावरण में मुद्रित या गैर-मुद्रित संसाधन उपलब्ध कराता है। विद्यालय लाइब्रेरियन इंडक्शन प्रोग्राम का आयोजन करता है। यह कक्षा प्रक्रिया के काम को सुविधाजनक बनाता है। यह सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक विद्यार्थी की संसाधनों तक समान पहुँच हो। विद्यालयी पुस्तकालय की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण

है। इसका डिजाइन, डिजिटल प्लेटफॉर्म, रणनीति और उपकरण शिक्षाशास्त्र और प्रौद्योगिकी परिवर्तन के रूप में बदलते हैं। यह भौतिक, डिजिटल और सामाजिक स्थान बनाता और विकसित करता है, जो पाठकों को प्रेरित करता है। पुस्तकालयाध्यक्ष कक्षा-शिक्षकों के साथ जाँच-आधारित कार्यक्रमों की योजना बनाने, उन्हें लागू करने और उनका मूल्यांकन करने में सहयोग करता है। विद्यालयी पुस्तकालय कार्यक्रम विद्यार्थियों को जानकारी एकत्र करने, विश्लेषण करने और व्यवस्थित करने के कौशल हासिल करने में मदद करते हैं। पुस्तकालय सर्वोत्तम रीडिंग प्रदान करता है और विद्यार्थियों में पढ़ने की आदत को विकसित करने और बनाए रखने का प्रयास करता है। काल्पनिक, डिजिटल और प्रिंट दोनों ये ऑडियो और वीडियो कक्षा शिक्षण का समर्थन करने के लिए यह संसाधनों की एक विस्तृत श्रृंखला को पूरा करता है। विद्यालयी पुस्तकालय की भूमिका अवर्णनीय है। यह ज्ञान और संस्कृति का प्रवेश द्वार है। यह शिक्षा और साक्षरता के लिए सीखने के अवसर पैदा करता है। यह नए विचारों के निर्माण में मदद करता है और स्कूली बच्चों में आलोचनात्मक सोच और वैज्ञानिक सोच विकसित करने का केंद्र है। अलग-अलग लोगों के लिए पुस्तकालयों का अलग-अलग मतलब होता है। माताएँ और स्कूल के पुस्तकालयाध्यक्ष बच्चों को उनकी पहली कहानी

पढ़ने की सलाह दे सकते हैं। विद्यार्थी किताबें पढ़ सकते हैं और उधार ले सकते हैं, इंटरनेट का उपयोग कर सकते हैं और अपने प्रोजेक्ट/असाइनमेंट तैयार कर सकते हैं। शिक्षण और सीखने के लिए केंद्रीय भौतिक केंद्र होने के नाते, विद्यालयी पुस्तकालय वर्चुअल हब के रूप में कार्य कर सकता है। पुस्तकालय के बुनियादी ढाँचे को इस तरह से विकसित करने की ज़रूरत है कि यह 24/7 काम कर सके और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा विकसित डिजिटल शिक्षण संसाधनों तक पहुँच बना सके। शिक्षकों और विद्यार्थियों के पास प्रिंट, डिजिटल और मल्टीमीडिया संग्रह तक संतुलित पहुँच हो सकती है।

मज़बूत स्कूल पुस्तकालय मज़बूत विद्यार्थियों का निर्माण करते हैं। विद्यालयी पुस्तकालयों और सामुदायिक पुस्तकालयों के उपयोग से बचपन के मार्ग से सीखना संभव है। इसलिए स्कूल के पुस्तकालय महान हैं। स्कूल के पुस्तकालयाध्यक्ष समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।

देश की ज्ञान अर्थव्यवस्था की खातिर सभी पुस्तकालयों को एक भूमिका निभाने की ज़रूरत है। जब हम विद्यालयी पुस्तकालयों और पुस्तकालयाध्यक्षों की स्थिति का अध्ययन करते हैं, तो स्कूलों, विद्यालयी पुस्तकालयों और स्कूल पुस्तकालयाध्यक्षों पर नीपा के शिक्षा प्रबंधन सूचना प्रणाली (ई.एम.आई.एस.) डेटा का उल्लेख नीचे किया गया है—

कुल संख्या स्कूलों की	15,58,903	
माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की कुल संख्या	2,73,113	17.52%
पुस्तकालय वाले कुल विद्यालय	12,06,291	77.38%
पुस्तकालय के साथ माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालयों की कुल संख्या	2,43,111	89%
पुस्तकालयाध्यक्षों वाले स्कूल	1,09,526	7.02%

पुस्तकालयाध्यक्ष के साथ माध्यमिक विद्यालय और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की संख्या	63,337	23.19%
---	--------	--------

भारत में पुस्तकालय विज्ञान शिक्षा ने शताब्दी पार कर ली है, लेकिन विद्यालयी पुस्तकालयाध्यक्ष निम्नलिखित के लिए वकालत करते हैं— हर स्कूल में एक पुस्तकालय होना चाहिए, पुस्तकालयाध्यक्ष का पद स्वीकृत किया जाए, योग्य पुस्तकालयाध्यक्ष की नियुक्ति की जाए, पुस्तकालय और पुस्तकालयाध्यक्ष को विद्यालय का अभिन्न अंग माना जाना चाहिए, विद्यालयी पुस्तकालय को स्कूल के अकादमिक, डिजिटल और सामाजिक केंद्र के रूप में माना जाना चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सफलता तब और बढ़ सकती है जब विद्यालयों में पुस्तकालय सशक्त हों। पेशेवर रूप से योग्य पुस्तकालयाध्यक्षों से युक्त स्कूल पुस्तकालय ज़मीनी स्तर पर स्कूली बच्चों में छिपी प्रतिभा को बाहर लाने के लिए विभिन्न गतिविधि-आधारित कार्यक्रमों के आयोजन में खिलाड़ियों के रूप में कार्य करने में मदद कर सकते हैं। स्कूल के पाठकों के ज्ञान-आधार की दिशा में विद्यालयी पुस्तकालय बहुत योगदान करते हैं। शैक्षणिक संस्थान में विद्यार्थियों का मुख्य उद्देश्य ज्ञान प्राप्त करना है, जो कि अध्यापक द्वारा पढ़ाया जाता है। परंतु पुस्तकालय स्थित पाठ्य सामग्री से अतिरिक्त ज्ञान प्राप्त होता है। आधुनिक युग में पुस्तकालयों को शिक्षा का मंदिर कहा जाता है, जहाँ किसी भी जाति, धर्म लिंग आदि के भेदभाव के बिना इन पुस्तकालयों में जाकर उपयोग कर सकें।

पुस्तकालय स्कूली बच्चों में पढ़ने की आदत डालने में सहायक हो सकते हैं। इसलिए विद्यालयी

पुस्तकालयों की भूमिका को कम करके नहीं आंका जा सकता है। पुस्तकालय गतिविधियों में प्रौद्योगिकी को एकीकृत करना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि शिक्षार्थी प्रौद्योगिकी के उपयोग के माध्यम से सीखना सीखते हैं और ई-संसाधनों का पता लगाते हैं और डिजिटल विभाजन को पाटते हैं। विद्यालयी पुस्तकालयों के माध्यम से 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' कार्यक्रम लक्ष्य तक पहुँच सकता है। खेलों के माध्यम से सीखने की खुशी एक नई अवधारणा है। विद्यालयी पुस्तकालय भी खेल के माध्यम से सीखने के लिए केंद्र के रूप में कार्य कर सकता है। जब विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दिवसों पर विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से स्कूल पुस्तकालय समुदाय के लिए बना जाता है, तो समुदाय विभिन्न सरकारी कार्यक्रमों/योजनाओं के संबंध में साक्षर हो जाता है। समुदाय के साथ जुड़ने और उनके मन में आ रही अंध मान्यताओं को मिटाने के लिए कुछ सेमिनार, व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं। पुस्तकालय में बाल साहित्य होना चाहिए। विद्यालयी पुस्तकालय विद्यालय का अकादमिक केंद्र होने के कारण पुस्तकालय बच्चों द्वारा पारस्परिक संबंधों, भाईचारे और टीम भावना को बढ़ावा देने के लिए गतिविधियों का आयोजन करता है। विद्यालयी पुस्तकालय राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह, चर्चा मंचों और अन्य विस्तार कार्यक्रमों का आयोजन करता है। कार्यात्मक विद्यालयी पुस्तकालयों के उपयोग के माध्यम से सीखने का वरदान संभव है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

- सबसे बुनियादी कदम के रूप में पुस्तकालय प्रतिष्ठित किया जाएगा।
- छात्रों तक पाठ्य सामग्री सफलतापूर्वक ले जाने का प्रयास किया जाएगा।
- देश में पहली आवश्यकता के रूप में स्कूलों में सुखद कार्य स्थिति सुनिश्चित करनी होगी। सीखने के लिए स्वेच्छा और आकर्षक स्थान के प्रारूप पुस्तकालय बनाया जाएगा।
- भारतीय भाषाओं में पठन सामग्री उपलब्ध करवाना।
- बाल-पुस्तकालय और चल-पुस्तकालय खुलना।
- पूरे भारत में और भी विषयों पर सामाजिक पुस्तक क्लबों की स्थापना करना।
- देशभर में पढ़ने कि संस्कृति के निर्माण के लिए सार्वजनिक और स्कूल लाइब्रेरी स्थापना करना।
- सभी भारतीय और स्थानीय भाषाओं में दिलचस्प और प्रेरणादायक बाल साहित्य उपलब्ध करना।
- बाल साहित्यों के अनुवाद करना।
- सामुदायिक एवं शिक्षण संस्थानों में पढ़ने कि आदत विकसित करना।
- डिजिटल पुस्तकालयों को अधिक व्यापक बनाना।
- Digital Infrastructure for Knowledge Sharing (Diksha) पर उच्चतर गुणवत्ता वाले संसाधनों को एक राष्ट्रीय भंडार उपलब्ध करवाना।

विद्यालयी पुस्तकालय के समुचित उपयोग हेतु अध्यापकों की भूमिका

- समय सारणी में प्रतिदिन एक घंटा पुस्तकालय के लिए अवश्य हो।
- अध्यापक समय-समय पर बाल साहित्य की नयी-नयी रचनाओं की जानकारी देते रहें।
- बच्चों को पुस्तकालय में अपनी रुचि की पुस्तकें खोजने, उलट-पुलट कर देखने और पढ़ने के अवसर मिलें।
- बच्चों में पुस्तकालय जाने के प्रति चाव उत्पन्न करना ज़रूरी है।
- बच्चों में पुस्तकालय में जाने, उठने-बैठने आदि नियमों की जानकारी देना भी ज़रूरी है।
- अध्यापक स्वयं भी प्रतिदिन पुस्तकालय जाने की आदत विकसित करें।
- बच्चों में यह तथ्य पोषित करना ज़रूरी है कि पुस्तकालय सिर्फ ज्ञानवर्धन के लिए ही नहीं है अपितु स्वस्थ मनोरंजन का भी साधन है।
- कक्षा परियोजनाओं के लिए, बच्चों को पुस्तकालय में संदर्भ अनुभाग का उपयोग करने के लिए कहा जा सकता है।
- बच्चों को उस पुस्तक के बारे में लिखने के लिए कहा जा सकता है, जो उन्होंने उस सप्ताह भाषा की कक्षा के दौरान पढ़ी थी।
- बच्चों को कक्षा में अन्य बच्चों के साथ पढ़ी गई कहानी साझा करने के लिए कहा जा सकता है।
- हो सके तो अवकाश के समय विद्यालय का पुस्तकालय खुला रखना चाहिए।

आज हम प्रतिज्ञाबद्ध होते हैं कि हम ज़्यादा करें। ज्ञान अर्जन करें तथा दूसरों को भी इस दिशा में से ज़्यादा समय पुस्तकालय के उपयोग हेतु प्रदान आगे बढ़ाएँ।

संदर्भ

अहय्या, राम. 2008. *समाजशास्त्र : विवेचना एवं परिचय* रावत प्रकाशन. पृ. 452. नयी दिल्ली.
व्यास, एस.डी. 1992. *पुस्तकालय एवं समाज*. पंचशील प्रकाशन. पृ. 174. जयपुर.
सैनी, ओमप्रकाश. 1999. *ग्रंथालय एवं समाज*. वार्डके पब्लिशर्स. पृ. 345. आगरा.
6 अक्टूबर, 2021 को <https://www.digitalindia.gov.in/di-initiatives> से प्राप्त.